संपादक : प्रोफेसर (डॉ.) शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

किन्नर विमर्श

किन्नर विमर्श

संपादक
प्रोफेसर (डॉ.) शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद
विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, नांदेड

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक या इसके किसी भी अंश का किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनरुपयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता, इसे संक्षिप्त, परिवर्धित कर प्रकाशित करना कानूनी अपराध है।

ISBN : 978-93-91435-48-6

पुस्तक : किन्नर विमर्श

संपादक : प्रो. (डॉ.) शेख शहेनाज़ बेगम अहेमद

प्रकाशक : **संकल्प प्रकाशन**

1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208 021

दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

कॉपीराइट © : संपादक

संस्करण : प्रथम, 2023

मूल्य : 700/-

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर-21

आवरण : गौरव शुक्ल, कानपुर-21

मुद्रक : सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर-21

हार्दिक शुभकामनाएँ

आलेख संग्रह के लिए
मेरी शुभकामनाएँ, जिसके लिए
प्रस्तुत है मेरी एकमात्र यह
कविता–
हिजड़ों की दुनिया

हिजड़ों की दुनिया (थर्ड जेन्डर्स वर्ल्ड)

संसार में है एक नाम हिन्दुस्तान
उसे कहते हैं भारत देश महान
जिसकी संस्कृति है महिमावान
रहते जाति–धर्म के जन सामाधान,
जगमें जहाँ का श्रेष्ठ है संविधान
जिसने दिया हक्क–कर्तव्य समान
समता स्वातंत्र्य बंधुता तत्त्व बलवान
सभी दलित पीड़ित शोषित पाते सम्मान,
उनमें अल्प सुधारित हैं तृतीय पंथी
कछुए–सी हो रही उनकी उन्नति
उनके हैं पार्षद विधायक अध्यापक
हर मद में नौकरी पा बढ़ाये स्वाभिमान
पंचायत या पालिका से पता लगने पर
किसी के घर पुत्र–पुत्री पैदा हुई हो या
प्रसूतिगृह का अर्भक देख खुशाली लेते
वह तृतीय पंथी हो, तो ले जाते कर गान,
उनका तालियाँ बजाना खास होता मर्म
निर्भीड पैसे मांगना ही रहता एक कर्म
जिनका न कोई होता पंथ–जात–धर्म
क्या आशिष देने से वंश बढ़ता है मेहमान?

–डॉ. नामदेव उतकर 'नान्देडी'

13. मानव तस्करी का ज्वलंत दस्तावेज : गुलाम मंडी
प्रा. डॉ. सविता चौधरी 82
14. किन्नर और हमारा समाज
डॉ. वासुदेवन 'शेष' 92
15. किन्नर समाज का समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. महेंद्र कुमार चौरसिया, डॉ. राजेश 95
16. साहित्य के आईने में किन्नर विमर्श
श्री शैलेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ. अरुण कुमार 99
17. किन्नरों का इतिहास - भारतीय साहित्य के संदर्भ में
शिवांगिनी परिहार 106
18. दहलीज का दर्द में अभिव्यक्त तृतीय लिंगी विमर्श
डॉ. प्रिया ए. 111
19. संवैधानिक अधिकारों की पहल एवं किन्नर समाज
डॉ. राजकुमार, डॉ. राजेश 117
20. हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श
डॉ. रेविता वलभीम कावळे 124
21. किन्नर जीवन और हिंदी कहानियाँ
प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके 131
22. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी कृत... 'मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी' आत्मकथा में व्यक्त किन्नर विमर्श
डॉ. मणियार अखिल बाबूसाब 136
23. तीसरी ताली उपन्यास में किन्नर जीवन
प्रो. डॉ. प्रमोद एस. पाटील, श्री किसन हिवरे लिलाधर 143
24. किन्नर विमर्श : सामाजिक यथार्थ का सच
डॉ. मनिषा गंगाराम मुगळीकर 148
25. किन्नर समाज की मंगल कामनाओं में समाहित लोकहित की भावना
डॉ. पुरुषोत्तम कुमार मिश्रा, डॉ. राजेश 153
26. किन्नर विमर्श और मैं क्यों नहीं
डॉ. दिलीप मेहरा 157
27. अधूरी देह की पीड़ा और दरमियाना
डॉ. दिलीप मेहरा 166
28. किन्नरों के लिए आधुनिक पहल : मैं भी औरत हूँ
प्रा. डॉ. मुमताज इमाम पठाण 176
29. तीसरी ताली में किन्नरों का छलकता दर्द
डॉ. दीपक विनायकराव पवार 182
30. पोस्ट बॉक्स नंबर 203· नालासोपारा : किन्नर जीवन की संघर्ष गाथा
सुनीता के. मड़के 187
31. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श
प्रो. (डॉ.) शेख शहेनाज अहेमद 194
32. किन्नर विमर्श और दापा
नीलम वाधवानी 199
33. किन्नर समाज की आर्थिक स्थिति एवं ब्रिटिश कोलिनिअल कानून
डॉ. अजय कुमार चतुर्वेदी, डॉ. राजेश 204
34. ऐतिहासिक संदर्भ में : किन्नर विमर्श
डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला 210
35. जिनका अंजुमन कभी गुलज़ार न हो सका...
डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला 215
36. हिन्दी कहानी और किन्नर विमर्श
डॉ. शेखर पांडुरंग घुंघरवार 223
37. तृतीय लिंगी समाज के सवाल कविता की भूमि से
डॉ. पवन कुमार रावत 228

31. हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श

-प्रो. (डॉ.) शेख शहेनाज अहेमद

अस्मिता खोज और तत्संबंधी विमर्शों का आज साहित्य में प्राधान्य देखा जाता है। इन्हीं के द्वारा साहित्य में उपेक्षित वर्गों का मनन होने लगा है। किंतु लिंग निरपेक्ष, समाज बहिष्कृत लोगों या किन्नरों की उपस्थिति इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में ही संभव हो सकी।

समाज में किन्नरों से संबंधित अनेक झूठी कथाओं ने उन्हें हाशियाकृत करने के प्रयास किए जाते रहे हैं। नए विमर्शों के उदय ने कथावस्तु के साथ शिल्प में भी क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। आज इक्कीसवीं सदी में उत्तर आधुनिकता और संरचनावाद ने परंपरागत मूल्यों को बदल कर रख दिया है। इस प्रक्रिया में साहित्यिक कृतियों का महत्व भी बदल गया है। भारतीय समाज अपनी मूल संरचना में आरंभ से ही दो वर्गों में बँट रहा है, यह वर्ग लिंग के आधार पर निर्धारित होता है, जहाँ स्त्री–पुरुष दो वर्ग ही मुख्यधारा में है। यहाँ जन्म के साथ ही वर्ग का निर्धारण हो जाता है। इसी के साथ समाज का एक अन्य महत्वपूर्ण वर्ग भी है– जिसे तृतीय लिंगी, थर्ड जेंडर, किन्नरों के रूप में पहचाना जाता है। इस वर्ग का दुर्भाग्य यह है कि समाज में प्रारंभ से ही मौजूद होने के बावजूद भी सदैव उपेक्षा का शिकार रहा है। समाज के साथ ही स्वयं के परिवार वालों द्वारा भी इन्हें त्याग दिया जाता है। जन्म से ही इन्हें समाज में रहते हुए भी समाज से इतर बहिष्कृत जीवन जीना पड़ता है। जीवनभर मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी इन्हें संघर्ष करना पड़ता है। आज अनेक विषय साहित्य में आकर विमर्श का रूप ग्रहण कर चुके हैं। किन्नर विमर्श भी वर्तमान समय का प्रमुख विमर्श बन चुका है। दशकों पूर्व से चले आ रहे दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श से आच्छादित हिंदी साहित्य का फलक आज तृतीय लिंगी पर भी कलम उठाने के लिए बाध्य हो रहा है। आरंभ से किन्नर विमर्श एक ऐसा विषय रहा, जिस पर लोग बात करना भी पसंद नहीं करते थे और यदि करते भी थे तो दबी जबान और व्यंग्यात्मक लहजे में। आज उस विषय पर कलम उठाना अपने आप में एक प्रशंसनीय और साहसिक पहल है।

हमारे समाज के अंग किन्नर समाज को हम हाशिए के समान तृतीय लिंगी, थर्ड जेंडर आदि नामों से पुकारते हैं। यह हाशिएकृत वर्ग समाज की आस्थावादी

जड़ मानसिकता के कारण किन्नर वर्ग को समाज में कभी उचित सम्मान नहीं मिल पाया। किन्नर वर्ग ने अपनी जन्मजात या दुर्घटनावश उत्पन्न शारीरिक विकृतियों होने पर भी स्वयं को समाज में स्थपित करना चाहा है किंतु समाज की प्रताड़ना ने उन्हें सदैव बहिष्कृत कर दिया है। यह समाज की संकुचित सोच का ही परिणाम है कि उन्हें परिवार व समाज से तिरस्कृत किया जाता है।

हिंदी साहित्य में इन्हीं वर्गों को विशेष रूप से केंद्र में रखकर कुछ उपन्यासों की रचना की गई जिनमें 'यमदीप', 'तीसरी ताली', 'गुलाम मंडी', 'पोस्टर बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा', 'किन्नर कथा', 'मैं पायल...' आदि प्रमुख हैं, इन उपन्यासों द्वारा किन्नर जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों एवं उनके संघर्षों को संवेदनात्मक स्तर पर बड़ी ही प्रमुखता से उठाया गया है। इस लेख उन्हीं की संवेदनाओं को सहेजने का प्रयास किया गया है।

हिंदी साहित्य में किन्नर समुदाय से संबंधित पहला उपन्यास 'यमदीप' (नीरजा माधव) है, जिसका प्रकाशन 2002 ई. में सामायिक प्रकाशन द्वारा किया गया था और 2009 में पुनः प्रकाशित हुआ। इसके बाद 'मैं भी औरत हूँ' (डॉ. अनुसया त्यागी) 'किन्नर कथा' (महेंद्र भीष्म), 'तीसरी ताली' (प्रदीप सौरभ), गुलाम मंडी (निर्मल भुराड़िया), 'प्रतिसंसार' (मनोज रूपड़ा), 'मैं पायल...' (महेंद्र भीष्म), 'पोस्टर बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' (चित्रा मुद्गल) अन्य उपन्यास है जिनमें किन्नर समुदाय को केंद्र में रखा गया है।

इन उपन्यासों का विश्लेषण करने पर किन्नर समुदाय से संबंधित कुछ प्रमुख समस्याएँ स्पष्ट होती हैं जिनमें सामाजिक, पारिवारिक, बहिष्कृति, विस्थापन, शिक्षा, रोजगार, देहव्यापार, यौन हिंसा, परस्पर संघर्ष, छद्म वेशधारी हिजड़ों की समस्या आदि प्रमुख है।

पितृसत्तात्मक समाज के पुरुषों द्वारा तृतीय लिंग के व्यक्तियों को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता रहा है। परिवार, रिश्ते, शिक्षा, रोजगार, आवास, सुविधाएँ, अधिकारों से बेदखल किया जाता है। इन सब के अभाव में ये नारकीय जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। किन्नरों की सामाजिक बहिष्कृति एक खास मनोवृत्ति के कारण होती है, जिसे 'ट्रान्सफोबिया' कहते हैं। "तीसरे लिंगी के प्रति भय, लज्जा, क्रोध, हिंसा, पूर्वाग्रह, भेदभाव आदि नकारात्मक भावों के सम्मिश्रण से बना यह 'ट्रान्सफोबिया' तीसरे लिंग के जीवन को नरक बना देता है।

किन्नरों का बहिष्कार सामाजिक दबाव के कारण उनके अपने घर और माता–पिता के द्वारा ही प्रारंभ होता है, "संतान कैसी भी हो, उसमें कैसी भी शारीरिक कमी क्यों न हो, माता–पिता को अपनी संतान हर हाल में भली लगती है, प्यारी होती है, फिर भले ही वह संतान हिजड़ा ही क्यों न हो फिर भी सामाजिक परिस्थितियों, खानदान की इज्जत–मर्यादा, झूठी शान के सामने अपने हिजड़े बच्चे से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहते है।"[2] इसी

सामाजिक भय के कारण गुलाम मंडी की अनारकली को घुर परा फेंक दिया जाता है और 'पोस्ट बॉक्स नं. 203, नालासोपारा' के हरिद्र शाह और वंदना बेन अपने मझले बेटे विनोद को किन्नर चंपाबाई को सौंपने पर विवश हो जाते है। 'प्रकृति की मार खाए बच्चे को पालना हँसी–मज़ाक नहीं है... ये दुनिया ऐसे बच्चों को स्वीकार नहीं करती। मंद बुद्धि और विकलांग बच्चों को तो समाज बर्दाश्त कर लेता है, लेकिन हिजड़े को नहीं।"[3] केवल परिवार ही नहीं समाज की वन्य संस्थाओं में भी हिजड़ों को भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

इसी पुरुषवादी दंभ के कारण ही किन्नर कथा में 'सोना' को उसके पिता 'जगत राज सिंह' वास्तविकता जानने पर स्वीकार नहीं कर पाते और उसे मारने का आदेश अपने दीवान 'पंचम सिंह' को दे देते है। 'मैं पायल...' उपन्यास में जुगनी का शराबी पिता उसे कलंक मानता है और शराब के नशे में उसे बेरहमी से पीटता है और कोसता रहता है, "ये जुगनी! हम क्षत्रिय वंश में कलंक पैदा हुई है, साली हिजड़ा है।"[4]

जन्म से ही किन्नरों के प्रति पारिवारिक और सामाजिक बहिष्कार जो शुरू होता है वह उसके आगे के जीवन में भी जारी रहता है। इन सबका प्रभाव उसके परिजनों के सामाजिक संबंधों पर भी पड़ता है, अपनी इसी व्यथा को 'तीसरी ताली' में 'सुप्रिया कपूर' ने एक पत्रिका के इंटरव्यू में व्यक्त करती है, "मैं कैसी हूँ? क्यों हूँ? क्यों हूँ? कितनी पीड़ा सहती हूँ? इन सवालों से किसी को सरोकार नहीं है। किसी को इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि मेरे जन्म के बाद मेरी माँ ने मुझे देखकर आत्महत्या कर ली। बाद में बड़ी बहन सिर्फ इसी बात के लिए ससुराल से निकाल दी गयी कि उसकी बहन हिजड़ी है।"[5] 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' में बिन्नी से जुड़ी सभी वस्तुओं को उसका भाई नष्ट करने का प्रयास करता है।

भारतीय समाज में किन्नरों का काम केवल बच्चों को जन्म और शादी–ब्याह जैसे खुशी के अवसर पर बधाइयां देने और नेग लेने तक ही सीमित कर दिया गया, इन अवसरों पर भी उन्हें हिनता से देखा जाता है और उनसे जल्दी छुटकारा पाने का प्रयास किया जाता है। 'किन्नर कथा' में इस व्यथा को 'तारा' व्यक्त करते हुए कहती है, "मेल–जोल केवल वहीं तक जहाँ तक इनकी खुशी, शादी, ब्याह, बच्चों का जन्म हो या मुंडन, हमीं बिन बुलाए बेशर्मी से तालियाँ पीटते हुए पहुँच जाता है, बिन बुलाए मेहमान की तरह हमें हिराकत से देखते है, कोई नहीं चाहता हमारा साथ, दूर भागते हैं हमारी छाया से जैसे हम इंसान न हो, कोई अजूबा हो, अछूत की तरह व्यवहार किया जाता है हम हिंजड़ों से।"[6]

कभी–कभी किन्नर का परिवार भावनाओं के आवेग से अपनी किन्नर संतान को अपनाना चाहता है तो वह समाज और परिवार से इतनी दूर जा चुका होता है कि वापस परिवार में आना संभव हीं नहीं हो पाता है। 'यमदीप' उपन्यास में 'नाजवाबी' के माता–पिता उसे अपनाना चाहते हैं तो 'यमदीप' उपन्यास में

'नाजवाबी' के माता–पिता उसे अपनाना चाहते हैं तो 'महताब गुरु' आगे आने वाली बाधाओं के बारे में सचेत करते हुए कहते है, "आप इस बस्ती में रह नहीं सकते, बाबूजी और अपनी बेटी को अपने पास रख भी नहीं सकते... दुनिया में हँसी–हंसारत के डर से। हिजड़ी के बाप कहलाना न आप बर्दास्त कर पाएंगे और न आपके परिवार के लोग।"[7] और इस तरह से सामाजिक बहिष्कार से संघर्ष करते हुए नजर आते है और अंत में यशोदा बेन द्वारा बिन्नी को स्वीकार करने के संबंध में अखबार में एक अधिसूचना भी दी जाती है। वर्तमान में आज किन्नरों के प्रति इसी सामाजिक मनोवृत्ति को तोड़ने की आवयकता है जो केवल और केवल जागरुकता और सामाजिक स्वीकार्यता से ही संभव हो पायेगा। इसी मनोवृत्ति के खिलाफ बिन्नी अपने भाषण में लोगों शपथ दिलाता है, "भविष्य में कोई माता–पिता लोकापवाद के भय से लिंग दोषी औलाद को दर–दर की ठोकरें खाने के लिए छूरे पर न फेंके। ...शपथ लीजिए जहाँ से लौटकर आप किसी लिंगदोषी नवजात बच्चे–बच्ची को किशोर–किशोरी को, युवक–युवती को जबरन उसके माता–पिता से अलग करने का पाप नहीं करेंगे। उससे उसका घर नहीं छीनेंगे। उपहासों के लात–घूसों से उसे जलील होने की विवशता नहीं सौपेंगे।"[8]

सामाजिक असुरक्षा और स्थायित्व के अभाव में किन्नरों के लिए शिक्षा की कल्पना करना भी एक बड़ी चुनौती लगता है। क्योंकि 2014 के पूर्व किन्नरों को अपनी पहचान से किस रूप में दाखिला लें, इसका भय था। अगर विद्यालय में हिजड़ा होने का भेद खुल जाने का भय था। इस बारे में महताब गुरू के इस कथन से संकेतित होता है, "किसी स्कूल में आजतक किसी हिजड़ा को पढ़ते हुए देखा है। किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? पुलिस में, मास्टरी में, कलक्टरी में... किसी में भी।"[9] अगर किन्नर बच्चा अपनी पहचान छुपाकर विद्यालय में दाखिला लेता है तो भेद खुलने की स्थिति में इन्हें बहिष्कृति और अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा और उचित कौशल का अभाव होने के कारण किन्नर समुदाय को रोजगार प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है जिसके कारण वे अपने पारम्परिक पेशे, जैसे लड़के के जन्म और शादी–ब्याह के अवसर पर बधाईयाँ देना और नेग प्राप्त करना, की ओर उन्मुख होते हैं। आज के समय में शहरीकरण के प्रभाव के कारण संयुक्त परिवार की परम्परा समाप्त हो जाने के कारण मनुष्यों की मानसिकता में बदलाव आया है। विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद भी आज किन्नर समुदाय को शिक्षा के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है और सरकार द्वारा किन्नरों के हित में उचित सुविधाओं के विकास की आवश्यकता है। विभिन्न सामाजिक संगठनों के द्वारा भी इनके हित में आगे आने की आवश्यकता है जो इन्हें रोजगार के लिए प्रेरित कर सकें और उचित आधारभूमि भी उपलब्ध कराएँ।

अंततः किन्नरों के सम्मुख आने वाली समस्याओं का समाधान उन्हें तृतीय लिंग के रूप मान्यता देने भर से ही नहीं हो जाता है। आज आवश्यकता है एक ऐसे आधारभूत ढाँचे की जो उन्हें ऐसा माहौल उपलब्ध कराने में सक्षम हो जिसमें वे बिना किसी हीन भावना के गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए आवश्यक जरूरतें प्राप्त कर सके इसके लिए सरकार के साथ–साथ गैर सरकारी संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। जो विभिन्न माध्यमों के द्वारा सामाजिक जागरुकता फैला कर समाज की मनोवृत्ति बदलने का कार्य करें। उन्हें शिक्षित कर रोजगार करने के योग्य बनाना चाहिए जिसे वे समाज में एक गरिमापूर्ण जीवन जी सके। कुल मिलाकर 'बिन्नी' के शब्दों में कहा जा सकता है कि "पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है।"[10] किन्नर समुदाय को समाज का साथ न मिलने के कारण इनका जीवन दुःखों से परिपूर्ण होता है। जीवन के हर क्षेत्र में चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक हो, राजनीतिक या आर्थिक हो, हर क्षेत्र में इनके साथ अपनी सोंच को बदलने की मुख्यधारा में जुड़कर एक सामान्य जीवन जी सके।

संदर्भ

1. सं. डॉ. एम फिरोज खान, सं. प्रथम, थर्ड जेंडर : कथा आलोचना, अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, पृ. 52
2. महेंद्र भीष्म– किन्नर कथा– पेपरबैक्स संस्करण सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.45
3. प्रदीप सौरभ– तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 81
4. महेंद्र भिष्म– मैं पायल– अमन प्रकाशन, कानपुर, पृ. 24
5. प्रदीप सौरभ– तीसरी ताली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 178
6. महेंद्र भिष्म– किन्नर कथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 66
7. नीरजा माधव– यमदीप, सुनील साहित्य सदन, दिल्ली, पृ. 93
8. चित्रा मुद्गल– पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 186
9. नीरजा माधव– यमदीप, सूनील साहित्य सदन, दिल्ली, पृ. 94
10. चित्रा मुद्गल– पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 120

विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, नांदेड